International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा की प्रासंगिकता

चन्द्र शेखर

स्कालर, राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी कॉलेज जौनपुर उत्तर प्रदेश, भारत

Author Email: shekhar22829@gmail.com

सारांश— लेख में प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा की प्रासंगिकता पर विस्तृत चर्चा की गई है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के प्रति आदर और संरक्षण की भावना वैदिक युग से ही विद्यमान रही है। वर्तमान समय में बढ़ते प्रदूषण, संसाधनों के दोहन और शहरीकरण ने पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ दिया है, जिससे उसकी रक्षा के लिए जनचेतना और पर्यावरण शिक्षा अत्यंत आवश्यक हो गई है। बालक के विकास में वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है, अतः प्राथमिक शिक्षा से ही पर्यावरण शिक्षा आरंभ की जानी चाहिए। इससे बच्चों में प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूकता, जिम्मेदारी और समझ विकसित होती है। लेख में बताया गया है कि किस प्रकार पर्यावरण शिक्षा बच्चों को तार्किक, बौद्धिक, सृजनात्मक और व्यवहारिक रूप से प्रशिक्षित करती है ताकि वे पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकें। बुडवर्थ और विश्वकोश के उद्धरणों द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि पर्यावरण जीवन को हर स्तर पर प्रभावित करता है। प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षण के उद्देश्य जैसे — प्रकृति के साथ संवाद, स्थानीय समस्याओं का हल, शैक्षिक भ्रमण और अनुभव आधारित शिक्षण को प्रमुखता दी गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और एनसीएफ 2005 ने भी इसे शिक्षा में अनिवार्य रूप से सम्मिलित करने का सुझाव दिया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर से ही पर्यावरण शिक्षा देना आवश्यक है ताकि भावी पीढ़ी प्रकृति के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक बन सके।

शब्दकुंजी: पर्यावरण शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, बालक का सर्वांगीण विकास, पर्यावरण संरक्षण, अनुभव आधारित शिक्षण

I. भूमिका

भारतीय संस्कृति साहित्य में पर्यावरण शिक्षा की जड़े अधिक प्राचीन है वैदिक युग में पशु, पक्षियों तथा पौधों के महत्व का उल्लेख पाया जाता है और पुराणों, उपनिषदों में भी मानव एवं प्रकृति की पारस्परिक निर्भरता का उल्लेख मिलता है तथा पर्यावरण की गुणवत्ता के लिए यज्ञ, हवन को महत्व दिया जाता था। पृथ्वी को सुख समृद्धि के विकास का स्रोत मानते थे परंतु आज पर्यावरण प्रदूषण से पारिस्थितिकी तंत्र बिल्कुल विपरीत हो रही है प्राकृतिक वायु सांस लेने, पानी पीने और भूमि कृषि करने योग्य नहीं रह गई है इसलिए आज पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव व्यापक रूप से किया गया है जिससे पर्यावरण की गुणवत्ता का अनुरक्षण किया जा सके।

बालक तथा व्यक्ति के विकास के संदर्भ में व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों में यह चर्चा रहती है कि वंशानुक्रम तथा वातावरण में कौन सा अधिक प्रभावित करता है इसमें कुछ विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकला की वातावरण और वंशानुक्रम बालक और व्यक्ति के विकास में दोनों समान रूप से प्रभावित करते हैं इसलिए शिक्षण संस्थानों में समुचित वातावरण का विकास करना चाहिए जिससे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक विकास किया जा सके जिससे परिवार समाज समुदाय और राष्ट्र को एक वांछित दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

II. प्रस्तावना

बालक जन्म के पूर्व और जन्म के बाद जैसे-जैसे वह बड़ा होता है वैसे-वैसे ही वह अपने परिवार आस-पास एवं समाज के वातावरण से प्रभावित होता हैं और उन वातावरण से वह कुछ न कुछ सीखता रहता है। जब बालक परिवार की अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्रथम औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेता है तो वहां पर पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण के प्रति जागरूकता और उसकी उपयोगिता एवं जिम्मेदारियों की भावना का विकास किया जाता है जिससे वह उचित निर्णय लेने और पर्यावरण रणनीतिकारों के रूप में कार्य करने तथा प्रकृति से प्राप्त संसाधनों और उसके महत्व को समझने में सक्षम होता है। पर्यावरण के महत्व को स्पष्ट करते हुए

बुडवर्थ ने कहा कि पर्यावरण में वे सभी तत्व आते हैं जो व्यक्ति को जीवन आरम्भ करने के समय से ही प्रभावित करते है। विश्वकोश के शब्दों में पर्यावरण उन सभी दिशाओं ,संगठन , प्रणालियों एवं प्रभावों का योग है जो जीवों, जातियों के उदभव, विकास और मृत्यु को प्रभावित करता है।

कक्षाओं में पढ़ने वाले बालक या विद्यार्थी आने वाले समय में देश के भविष्य है और अपनी भूमिकाओं का अपने स्तर से और तार्किक , बौद्धिक, और सृजनात्मकता, आधुनिकता के माध्यम से पर्यावरण के संबंध में राष्ट्र को एक वांछित दिशा प्रदान करेंगे जिससे राष्ट्र एक विशुध्द पर्यावरण का निर्माण करने में निपुण होगा।

III. प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

पृथ्वी पर अनेक प्रकार की प्रजातियां रहती हैं और उसके जीवन के लिए हवा पानी व भोजन एवं ससंधानों के लिए पर्यावरण पर निर्भर होना पड़ता है इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा और उसे अगली पीढ़ी में हस्तांतरण करने के लिए पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता है। दूसरी तरफ विकास की अंधाधुंध दौड़ वह शहरीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण संसाधनों का दोहन तीव्रगति से होने लगा है जिससे न केवल वातावरण में प्रदूषण बड़ा है बल्कि हमारे जीवन की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है आज हम प्रदूषण वायु जल ग्रहण करने के लिए मजबूर है तथा बढ़ती ध्वनि के कारण बचपन से ही बालक मानसिक रोगों से ग्रसित होते जा रहे हैं इस बढ़ते दुष्परिणामों और दुष्प्रभावो को देखते हुए मंत्रालय द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु कई नियम बनाए गए हैं परंतु यह नियम किताबों की शोभा ही बढ़ा रहे हैं यह नियम तब तक प्रभाव नहीं डाल सकते जब तक इन्हें आम जनता द्वारा अमल में नहीं लाया जाता इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा और जन चेतना की अत्यंत आवश्यकता है जिसे हम पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से ही दूर कर सकते हैं। इसलिए पर्यावरण को संरक्षित करने और अग्रसर करने के लिए पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता है जिससे बालक और व्यक्ति अथवा अन्य नागरिक पर्यावरण के महत्व एवम उसकी उपयोगिता को समझने में सक्षम हो सके।

IV. प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षण का मुख्य उद्देश्य बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूक करना, समझ को विकसित करना और जिम्मेदारी की भावना का विकास करना तथा बच्चों में उनके आस-पास के प्राकृतिक और सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण की जानकारी देना जिससे पर्यावरण के महत्व को समझे तथा पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर चर्चा करें और पर्यावरण के प्रति प्रेम सम्मान एवं जिम्मेदारी की भावना का विकास करने के साथ-साथ व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित तथा पर्यावरण के बारे में सीखने के लिए वास्तविक दुनिया के अनुभवों का उपयोग करना। जैसे पार्क में समय बिताना, स्थानीय पर्यावरण की समस्याओं पर काम करना, पर्यावरण

के संबंध में मानचित्र का प्रयोग करना, शैक्षिक भ्रमण कराना इत्यादि जिससे बालक तार्किक, बौद्धिक, सृजनात्मक और आधुनिकता के माध्यम से पर्यावरण समस्याओं को हल करने में सक्षम हो सके।

V. प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा की प्रासंगिकता

प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा बालकों में अपने आसपास के वातावरण के प्रति जागरूक और सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण आदि के परिवेश के बारे में बुनियादी ज्ञान प्रदान करने और पर्यावरण के क्षेत्र में तार्किक , बौद्धिक, सृजनात्मक, आधुनिक रूप से चिन्तन करके पर्यावरण समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रेरित करती है। प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा के महत्व और उपयोगिता को देखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और एन.सी.एफ. 2005 तथा विभिन्न अयोगी ने अपने-अपने सुझाव दिए हैं। इसका परिणाम यह है कि प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षण संस्थान में पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है, जिससे विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूप किया जा सके।

VI. निष्कर्ष

प्राथमिक शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा का निष्कर्ष यह है पर्यावरण का संबंध मनुष्य के जीवन से होता है बालक या व्यक्त जन्म के पूर्व या जन्म के बाद से ही पर्यावरण के सम्पर्क में आता है अत: पर्यावरण की शिक्षा प्रारम्भ से दी जानी चाहिए इस दृष्टि से पर्यावरण शिक्षा प्राथमिक स्तर से दी जानी चाहिए जिससे बालक पर्यावरण के संबंध में बुनियादी ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ अपने आस-पास और सामाजिक, सांस्कृतिक प्राकृतिक और परिस्थितिकी तंत्र को समझने में सक्षम हो तथा भविष्य में परिवार, समाज, समुदाय और राष्ट्र को एक वांछित दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम हो सके। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों पर कोई अतरिक्त भार न पड़े।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. एनसीईआरटी (2005). पर्यावरण अध्ययन, प्राथमिक कक्षा हेतु पाठ्यपुस्तक।
2. शर्मा, आर.ए. (2010). पर्यावरण शिक्षा। मेरठ: ललिता प्रकाशन।
3. मिश्रा, एस.के. (2012). शिक्षा में पर्यावरणीय चिंतन। नई दिल्ली: किताबमहल।
4. पर्यावरण शिक्षा, राधावल्ल्भ उपाध्याय
5. पर्यावरण अध्ययन शिक्षण (भौतिक एवं जैविक पर्यावरण) पंडित खेमराज शर्मा और पंडित बृजराज शर्मा